आज
कानपुर
23 जून, 2021

20 जुलाई तक लौकी की खेती के लिये समय अच्छा

❑ कृषि वैज्ञानिक ने किसानों को जारी की एडवाइजरी

डॉ आईएन शुक्ला

कानपुर, 22 जून। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय के कल्याणपुर स्थित सब्जी अनुभाग के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ आईएन शुक्ला ने खरीफ में लौकी की वैज्ञानिक खेती विषय पर किसानों के लिये एडवाइजरी जारी की है। डॉक्टर शुक्ला ने बताया कि लौकी से विभिन्न प्रकार के व्यंजन जैसे रायता, कोफ्ता, हलवा, खीर इत्यादि बनाने के लिए प्रयोग करते हैं। उन्होंने कहा कि औषधि की दृष्टि से भी यह महत्वपूर्ण है। लौकी कब्ज कम करने, पेट साफ करने, खांसी या बलगम दूर करने में लाभकारी है। बताया कि लौकी में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, खाद्य रेशा,खनिज लवण के अलावा प्रचुर मात्रा में अनेकों विटामिन पाए जाते हैं। डॉक्टर शुक्ला ने बताया कि इसकी खेती पहाड़ी क्षेत्रों से लेकर दक्षिण भारत के राज्यों तक में की जाती है। कहा कि निर्यात की दृष्टि से सब्जियों में लौकी महत्वपूर्ण है। लौकी के बीज के अंकुरण के लिए 30 - 35 डिग्री सेंटीग्रेड और पौधों की बढ़वार के लिए 32-38 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान की आवश्यकता होती है। उन्होंने किसानों को सलाह दी है लौकी की खेती के लिए बलुई दोमट तथा जीवांश युक्त चिकनी मिट्टी जिस का पीएच मान

6 - 7 हो सही होती है। लौकी की बुवाई का सही समय 20 जून से 20 जुलाई तक है। लौकी की प्रजातियां जैसे काशी गंगा, काशी बहार, आर्का बहार, पूसा नवीन, पूसा संदेश, नरेंद्र रश्मि प्रमुख है। लौकी का बीज 2.5 से 3 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है। डॉ शुक्ला ने बताया कि लौकी से अच्छी पैदावार लेने के लिए 50 किलोग्राम नाइट्रोजन, 30 किलोग्राम फास्फोरस तथा 35 किलोग्राम पोटाश की आवश्यकता होती है।

खरीफ में लौकी की वैज्ञानिक खेती पर डॉ. शुक्ला ने जारी की एडवाइजरी

23/06/2021 साध्य हलचल

कानपुर। सीएसए के कल्याणपुर स्थित सब्जी अनुभाग के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ आई एन शुक्ला ने खरीफ में लौकी की वैज्ञानिक खेती विषय पर किसानों हेतु एडवाइजरी जारी की है। डॉ. शुक्ला ने बताया कि लौकी कद्दू वर्गीय महत्वपूर्ण सब्जी है। उन्होंने बताया कि लौकी से विभिन्न प्रकार के व्यंजन जैसे रायता, कोफ्ता,हलवा, खीर इत्यादि बनाने के लिए प्रयोग करते हैं। उन्होंने कहा कि औषधि की दृष्टि से भी यह अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह कब्ज को कम करने, पेट को साफ करने,खांसी या बलगम दूर करने में अत्यंत लाभकारी है। उन्होंने बताया कि इसके मुलायम फलों में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, खाद्य रेशा,खनिज लवण के अलावा प्रचुर मात्रा में अनेकों विटामिन पाए जाते हैं। डॉ. शुक्ला ने बताया कि इसकी खेती पहाड़ी क्षेत्रों से लेकर दक्षिण भारत के राज्यों तक विस्तृत रूप में की जाती है। उन्होंने कहा कि निर्यात की दृष्टि से सब्जियों में लौकी अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने बताया की लौकी के बीज के अंकुरण के लिए 30-35 डिग्री सेंटीग्रेड और पौधों की बढ़वार के लिए 32-38 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान की आवश्यकता होती है। उन्होंने किसानों को सलाह दी है लौकी की खेती के लिए बलुई दोमट तथा जीवांश युक्त चिकनी मिट्टी जिस का पीएच मान 6 - 7 हो सर्वोत्तम होती है। उन्होंने बताया कि लौकी की बुवाई का सर्वोत्तम समय 20 जून से 20 जुलाई तक सर्वोत्तम है। इस की ऊतशील प्रजातियां जैसे काशी गंगा, काशी बहार, आर्का बहार, पूसा नवीन, पूसा

संदेश, नरेंद्र रश्मि प्रमुख उन्नतशील प्रजातियां है। उन्होंने बताया कि लौकी का बीज 2.5 से 3 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है। डॉ शुक्ला ने बताया कि लौकी से अच्छी पैदावार लेने के लिए 50 किलोग्राम नाइट्रोजन, 30 किलोग्राम फास्फोरस तथा 35 किलोग्राम पोटाश की आवश्यकता होती है। उन्होंने बताया कि एक स्थान पर दो-तीन बीज 4 सेंटीमीटर गहराई पर बुवाई करना चाहिए। डॉ शुक्ला ने बताया यदि किसान भाई वैज्ञानिक विधि से लौकी की खेती करते हैं। तो 400 से 450 कुंतल प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त होगी। जो किसान भाइयों के लिए लाभ एवं आय की दृष्टि से अच्छी है।

@gmail.com, vidhankesarinews@gmail.com

www.vi

हिन्दी दैनिक

विधान केसरी

...खबर सिर्फ जनहित के लिए

लखनऊ संस्करण, बुधवार 23 जून 2021 (वर्ष-3 अंक 02), मूल्य-2.00 रुपये पृष्ठ-20

महिलाओं को प्रशिक्षित करने हेतु... पेज-3

प्रधानमंत्री ने प्रारंभ से कृषि और... पेज-20

बीजेपी को कितनी बड़ी

खरीफ में लौकी की वैज्ञानिक खेती पर डॉ. शुक्ला ने जारी की एडवाइजरी

कानपुर (विधान केसरी)। सीएसए के कल्याणपुर स्थित सब्जी अनुभाग के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ आई एन शुक्ला ने खरीफ में लौकी की वैज्ञानिक खेती विषय पर किसानों हेतु एडवाइजरी जारी की है। डॉ. शुक्ला ने बताया कि लौकी कद्दू वर्गीय महत्वपूर्ण सब्जी है। उन्होंने बताया कि लौकी से विभिन्न प्रकार के व्यंजन जैसे रायता, कोफ्ता,हलवा, खीर इत्यादि बनाने के लिए प्रयोग करते हैं। उन्होंने कहा कि औषधि की दृष्टि से भी यह अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह कब्ज को कम करने, पेट को साफ करने,खांसी या बलगम दूर करने में अत्यंत लाभकारी है। उन्होंने बताया कि इसके मुलायम फलों में प्रोटीन, कार्बोहाईड्रेट, खाद्य रेशा,खनिज लवण के अलावा प्रचुर मात्रा में अनेकों विटामिन पाए जाते हैं। डॉ. शुक्ला ने बताया कि इसकी खेती पहाड़ी क्षेत्रों से लेकर दक्षिण भारत के राज्यों तक विस्तृत रूप में की जाती है। उन्होंने कहा कि निर्यात की दृष्टि से सब्जियों में लौकी अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने बताया की लौकी के बीज के अंकुरण के लिए 30-35 डिग्री सेंटीग्रेड और पौधों की बढ़वार के लिए 32-38 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान की आवश्यकता होती है। उन्होंने किसानों को सलाह दी है लौकी की खेती के लिए बलुई दोमट तथा जीवांश युक्त चिकनी मिट्टी जिस का पीएच मान 6 - 7 हो सर्वोत्तम होती है। उन्होंने बताया कि लौकी की बुवाई का सर्वोत्तम समय 20 जून से 20 जुलाई तक सर्वोत्तम है। इस की उन्नतशील प्रजातियां जैसे काशी गंगा, काशी बहार, आर्का बहार, पूसा नवीन, पूसा संदेश, नरेंद्र रश्मि प्रमुख उन्नतशील प्रजातियां है। उन्होंने बताया कि लौकी का बीज 2.5 से 3 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर

की आवश्यकता होती है। डॉ शुक्ला ने बताया कि लौकी से अच्छी पैदावार लेने के लिए 50 किलोग्राम नाइट्रोजन, 30 किलोग्राम फास्फोरस तथा 35 किलोग्राम पोटाश की आवश्यकता होती है। उन्होंने बताया कि एक स्थान पर दो-तीन बीज 4 सेंटीमीटर गहराई पर बुवाई करना चाहिए। डॉ शुक्ला ने बताया यदि किसान भाई वैज्ञानिक विधि से लौकी की खेती करते हैं। तो 400 से 450 कुंतल प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त होगी। जो किसान भाइयों के लिए लाभ एवं आय की दृष्टि से अच्छी है।

उत्तराखंड/उत्तर प्रदेश का प्रथम द्विभाषीय (हिन्दी-अंग्रेजी) सांध्य दैनिक समाचार पत्र

जनमत टुडे

वर्ष:12 | अंक:174 | देहरादून, मंगलवार , 22 जून, 2021 | पृष्ठ:08 | मूल्य:2/रु

3 रिश्वत मांगने वाले अधिकारी को विजिलेंस की टीम ने दबोचा

खरीफ में लौकी की वैज्ञानिक खेती: डॉ. आईएन शुक्ला

दीपक गौड़ (जनमत टुडे)

कानपुर: चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के कल्याणपुर स्थित सब्जी अनुभाग के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ आई एन शुक्ला ने खरीफ में लौकी की वैज्ञानिक खेती विषय पर किसानों हेतु एडवाइजरी जारी की है डॉ० शुक्ला ने बताया कि लौकी कद्दू वर्गीय महत्वपूर्ण सब्जी है उन्होंने बताया कि लौकी से विभिन्न प्रकार के व्यंजन जैसे रायता, कोफ्ता, हलवा, खीर इत्यादि बनाने के लिए प्रयोग करते हैं उन्होंने कहा कि औषधि की दृष्टि से भी यह अत्यंत महत्वपूर्ण है यह कब्ज को कम करने पेट को साफ करने, खांसी या बलगम दूर करने में अत्यंत लाभकारी है उन्होंने बताया कि इसके मुलायम फलों में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, खाद्य रेशा,खनिज लवण के अलावा प्रचुर मात्रा में अनेकों विटामिन पाए जाते हैं डॉ० शुक्ला ने बताया कि इसकी खेती पहाड़ी क्षेत्रों से लेकर दक्षिण भारत के राज्यों तक विस्तृत रूप में की जाती है उन्होंने कहा कि निर्यात की दृष्टि से सब्जियों में लौकी अत्यंत महत्वपूर्ण

है उन्होंने बताया की लौकी के बीज के अंकुरण के लिए 30–35 डिग्री सेंटीग्रेड और पौधों की बढ़वार के लिए 32 से 38 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान की आवश्यकता होती है उन्होंने किसानों को सलाह दी है लौकी की खेती के लिए बलुई दोमट तथा जीवांश युक्त चिकनी मिट्टी जिस का पीएच मान 6–7 हो सर्वोत्तम होती है उन्होंने बताया कि लौकी की बुवाई का सर्वोत्तम समय 20 जून से 20 जुलाई तक सर्वोत्तम है इस की उन्नतशील प्रजातियां जैसे काशी गंगा, काशी बहार, आर्का बहार, पूसा नवीन, पूसा संदेश, नरेंद्र रश्मि प्रमुख उन्नतशील प्रजातियां है उन्होंने बताया कि लौकी का बीज 2.5 से 3 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है डॉ शुक्ला ने बताया कि लौकी से अच्छी पैदावार लेने के लिए 50 किलोग्राम नाइट्रोजन, 30 किलोग्राम फास्फोरस तथा 35 किलोग्राम पोटाश की आवश्यकता होती है उन्होंने बताया कि एक स्थान पर दो–तीन बीज 4 सेंटीमीटर गहराई पर बुवाई करना चाहिए डॉ शुक्ला ने बताया यदि किसान भाई वैज्ञानिक विधि से लौकी की खेती करते हैं तो 400 से 450 कुंतल प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त होगी जो किसान भाइयों के लिए लाभ एवं आय की दृष्टि से अच्छी है।

खरीफ़ वर्षा ऋतुद्ध में लौकी की वैज्ञानिक खेती.डॉ आई एन शुक्ला

23/06/2021 जन सत्ता एक्सप्रेस

दैनिक सत्ता एक्सप्रेस कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के कल्याणपुर स्थित सब्जी अनुभाग के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ आई एन शुक्ला ने खरीफ में लौकी की वैज्ञानिक खेती विषय पर किसानों हेतु एडवाइजरी जारी की है। डॉक्टर शुक्ला ने बताया कि लौकी कद्दू वर्गीय महत्वपूर्ण सब्जी है। उन्होंने बताया कि लौकी से विभिन्न प्रकार के व्यंजन जैसे रायताए कोफ्ताएहलवाए खीर इत्यादि बनाने के लिए प्रयोग करते हैं। उन्होंने कहा कि औषधि की दृष्टि से भी यह अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह कब्ज को कम करनेए पेट को साफ करनेएखांसी या बलगम दूर करने में अत्यंत लाभकारी है। उन्होंने बताया कि इसके मुलायम फलों में प्रोटीनए कार्बोहाइड्रेटए खाद्य रेशाएखनिज लवण के अलावा प्रचुर मात्रा में अनेकों विटामिन पाए जाते हैं। डॉक्टर शुक्ला ने बताया कि इसकी खेती पहाड़ी क्षेत्रों से लेकर दक्षिण भारत के राज्यों तक विस्तृत रूप में की जाती है। उन्होंने कहा कि निर्यात की दृष्टि से सब्जियों में लौकी अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने बताया की लौकी के बीज के अंकुरण के लिए 30 . 35 डिग्री सेंटीग्रेड और पौधों की बढ़वार के लिए 32 से 38 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान की आवश्यकता होती है। उन्होंने किसानों को सलाह दी है लौकी की खेती के लिए बलुई दोमट तथा जीवांश युक्त चिकनी मिट्टी जिस का पीएच मान 6 . 7 हो सर्वोत्तम होती है। उन्होंने बताया कि लौकी की बुवाई का सर्वोत्तम समय 20 जून से 20 जुलाई तक सर्वोत्तम है। इस की उन्नतशील प्रजातियां जैसे काशी गंगाए काशी बहारए आर्का बहारए पूसा नवीनए पूसा संदेशए नरेंद्र रश्मि प्रमुख उन्नतशील प्रजातियां है। उन्होंने बताया कि लौकी का बीज 2º5 से 3 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है। डॉ शुक्ला ने बताया कि लौकी से अच्छी पैदावार लेने के लिए 50 किलोग्राम नाइट्रोजनए 30 किलोग्राम फास्फोरस तथा 35 किलोग्राम पोटाश की आवश्यकता होती है। उन्होंने बताया कि एक स्थान पर दो.तीन बीज 4 सेंटीमीटर गहराई पर बुवाई करना चाहिए। डॉ शुक्ला ने बताया यदि किसान भाई वैज्ञानिक विधि से लौकी की खेती करते हैं। तो 400 से 450 कुंतल प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त होगी। जो किसान भाइयों के लिए लाभ एवं आय की दृष्टि से अच्छी है।

News Expert
11 घंटे · Facebook for Android ·

खरीफ(वर्षा ऋतु) में लौकी की वैज्ञानिक खेती: डॉक्टर आई एन शुक्ला
कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के कल्याणपुर स्थित सब्जी अनुभाग के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ आई एन शुक्ला ने *खरीफ में लौकी की वैज्ञानिक खेती* विषय पर किसानों हेतु एडवाइजरी जारी की है। डॉक्टर शुक्ला ने बताया कि लौकी कद्दू वर्गीय महत्वपूर्ण सब्जी है। उन्होंने बताया कि लौकी से विभिन्न प्रकार के व्यंजन जैसे रायता, कोफ्ता,हलवा, खीर इत्यादि बनाने के लिए प्रयोग करते हैं। उन्होंने कहा कि औषधि की दृष्टि से भी यह अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह कब्ज को कम करने, पेट को साफ करने,खांसी या बलगम दूर करने में अत्यंत लाभकारी है। उन्होंने बताया कि इसके मुलायम फलों में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, खाद्य रेशा,खनिज लवण के अलावा प्रचुर मात्रा में अनेकों विटामिन पाए जाते हैं। डॉक्टर शुक्ला ने बताया कि इसकी खेती पहाड़ी क्षेत्रों से लेकर दक्षिण भारत के राज्यों तक विस्तृत रूप में की जाती है। उन्होंने कहा कि निर्यात की दृष्टि से सब्जियों में लौकी अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने बताया की लौकी के बीज के अंकुरण के लिए 30 - 35 डिग्री सेंटीग्रेड और पौधों की बढ़वार के लिए 32 से 38 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान की आवश्यकता होती है। उन्होंने किसानों को सलाह दी है लौकी की खेती के लिए बलुई दोमट तथा जीवांश युक्त चिकनी मिट्टी जिस का पीएच मान 6 - 7 हो सर्वोत्तम होती है। उन्होंने बताया कि लौकी की बुवाई का सर्वोत्तम समय 20 जून से 20 जुलाई तक सर्वोत्तम है। इस की उन्नतशील प्रजातियां जैसे काशी गंगा, काशी बहार, आर्का बहार, पूसा नवीन, पूसा संदेश, नरेंद्र रश्मि प्रमुख उन्नतशील प्रजातियां है। उन्होंने बताया कि लौकी का बीज 2.5 से 3 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है। डॉ शुक्ला ने बताया कि लौकी से अच्छी पैदावार लेने के लिए 50 किलोग्राम नाइट्रोजन, 30 किलोग्राम फास्फोरस तथा 35 किलोग्राम पोटाश की आवश्यकता होती है। उन्होंने बताया कि एक स्थान पर दो-तीन बीज 4 सेंटीमीटर गहराई पर बुवाई करना चाहिए। डॉ शुक्ला ने बताया यदि किसान भाई वैज्ञानिक विधि से लौकी की खेती करते हैं। तो 400 से 450 कुंतल प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त होगी। जो किसान भाइयों के लिए लाभ एवं आय की दृष्टि से अच्छी है। (डॉ खलील खान), मीडिया प्रभारी, चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर।

WORLD खबर EXPRESS
WORLD ख़बर एक्सप्रेस
22 जून 2021, मंगलवार
MID DAY E-PAPER

सीएसए के वरिष्ठ वैज्ञानिक ने किसानों के लिए जारी की एडवाइजरी

खरीफ में करें लौकी की वैज्ञानिक खेतीः डॉ. शुक्ला

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय के वरिष्ठ

वैज्ञानिक डॉ. आईएन शुक्ला ने खरीफ में लौकी की वैज्ञानिक खेती विषय पर किसानों के लिए एडवाइजरी जारी की है। डॉ. शुक्ला ने बताया कि लौकी-कद्दू वर्गीय महत्वपूर्ण सब्जी है। लौकी से विभिन्न प्रकार के व्यंजन जैसे रायता, कोफ्ता, हलवा, खीर आदि बनाने के लिए प्रयोग करते हैं। उन्होंने कहा कि औषधि की दृष्टि से भी यह अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह कब्ज को कम करने, पेट को साफ करने, खांसी या बलगम दूर करने में अत्यंत लाभकारी है।

उन्होंने बताया कि इसके मुलायम फलों में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, खाद्य रेशा, खनिज लवण के अलावा प्रचुर मात्रा में अनेकों विटामिन पाए जाते हैं। इसकी खेती पहाड़ी क्षेत्रों से लेकर दक्षिण भारत के राज्यों तक विस्तृत रूप में की जाती है। निर्यात की दृष्टि से सब्जियों में लौकी अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने बताया की लौकी के बीज के अंकुरण के लिए 30 - 35 डिग्री सेंटीग्रेड और पौधों की बढ़वार के लिए 32 से 38 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान की आवश्यकता होती है। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि लौकी की खेती के लिए बलुई दोमट और जीवांश युक्त चिकनी मिट्टी जिस का पीएच मान 6-7 हो, सर्वोत्तम होती है। लौकी की बुवाई का सर्वोत्तम समय 20 जून से 20 जुलाई तक है। इसकी उन्नतशील प्रजातियां जैसे काशी गंगा, काशी बहार, आर्का बहार, पूसा नवीन, पूसा संदेश, नरेंद्र रश्मि प्रमुख है। उन्होंने बताया कि लौकी का बीज 2.5 से 3 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है। डॉ. शुक्ला ने बताया कि लौकी से अच्छी पैदावार लेने के लिए 50 किलोग्राम नाइट्रोजन, 30 किलोग्राम फास्फोरस तथा 35 किलोग्राम पोटाश की आवश्यकता होती है। एक स्थान पर दो-तीन बीज 4 सेंटीमीटर गहराई पर बुवाई करना चाहिए। डॉ शुक्ला ने बताया यदि किसान, वैज्ञानिक विधि से लौकी की खेती करते हैं तो 400 से 450 कुंतल प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त होगी जो किसानों के लिए लाभ और आय की दृष्टि से अच्छी है।